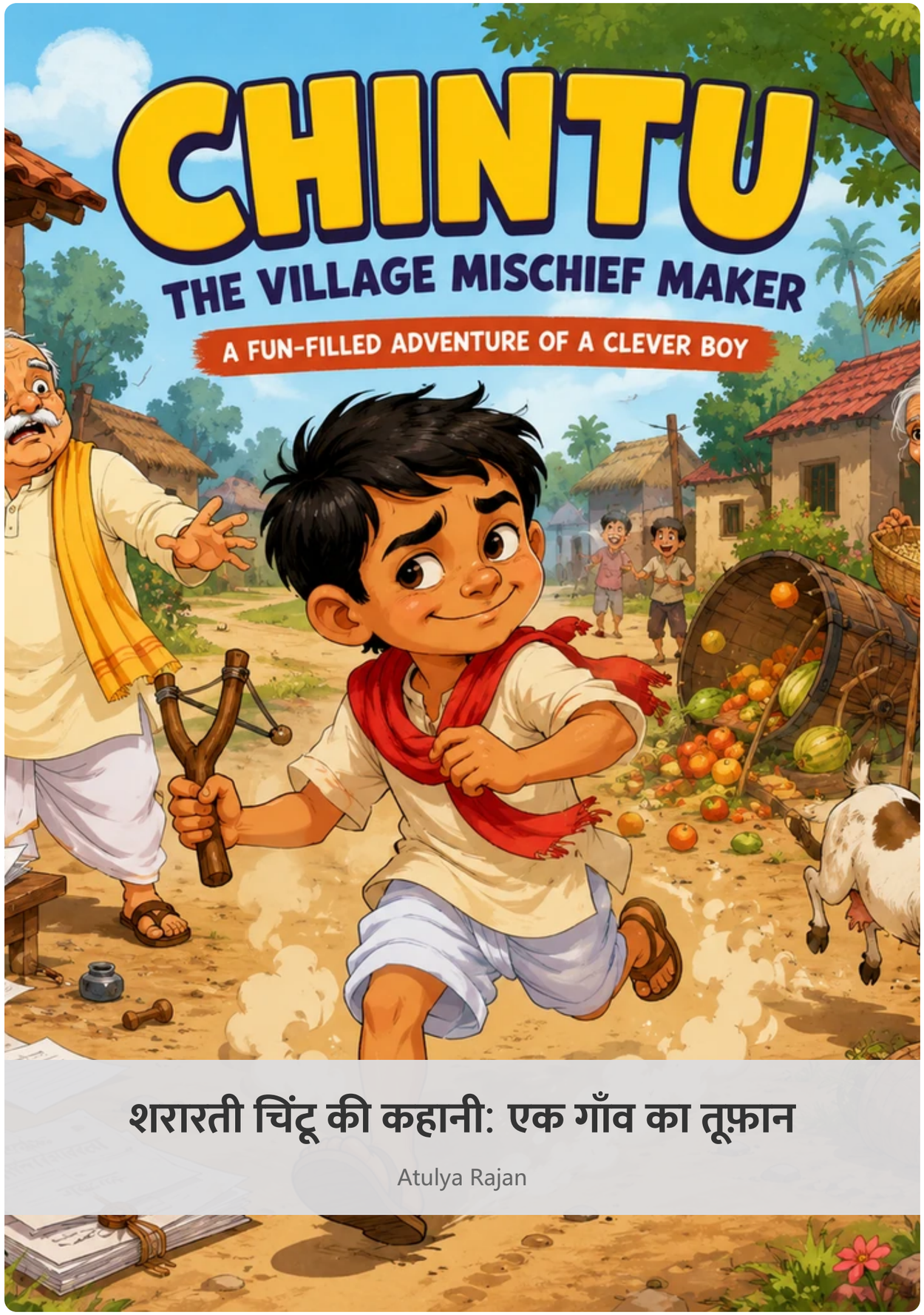

शरारती चिंटू की कहानी: एक गाँव का तूफ़ान

Atulya Rajan

छोटे से गाँव में सूरज अपनी पहली किरण बिखेर रहा था, लेकिन शरारती चिंटू पहले ही जाग चुका था। वह अपनी खिड़की से झाँक क एक नये दिन की नयी शरारत के बारे में सोच रहा था।

अरे देखो, वह बूढ़ी अम्मा कितने ध्यान से अपनी गाय को सहल
रही हैं। चिंटू ने दबे पाँव उनके पीछे जाकर गाय के पास एक छोटी स
नकली चूहे की खिलौना रख दी।

अम्मा जैसे ही मुड़ीं और खिलौना देखा, वो डर के मारे 'चूहा, चूह चिल्लाने लगीं। चिंटू अपनी हँसी रोकते हुए पेड़ के पीछे छिप गया औ अम्मा की फजीहत का मज़ा लेने लगा।

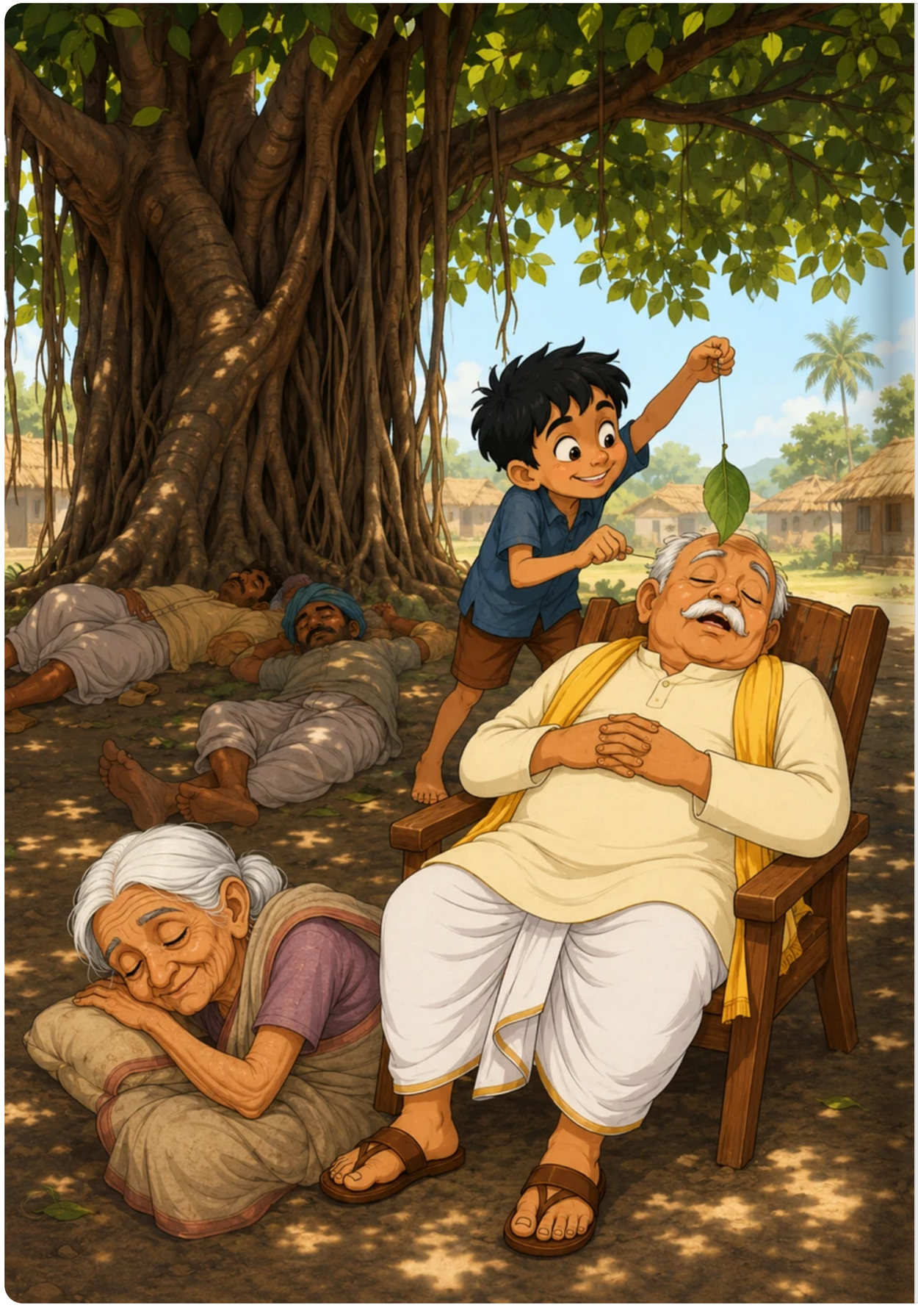

दोपहर में गाँव के कुछ लोग बरगद के पेड़ की छाया में गहरी नी
सो रहे थे। चिंटू ने एक बड़ी सी पत्ती को धागे से बाँध कर चुपके से
मुखिया जी की नाक के पास लटका दिया।

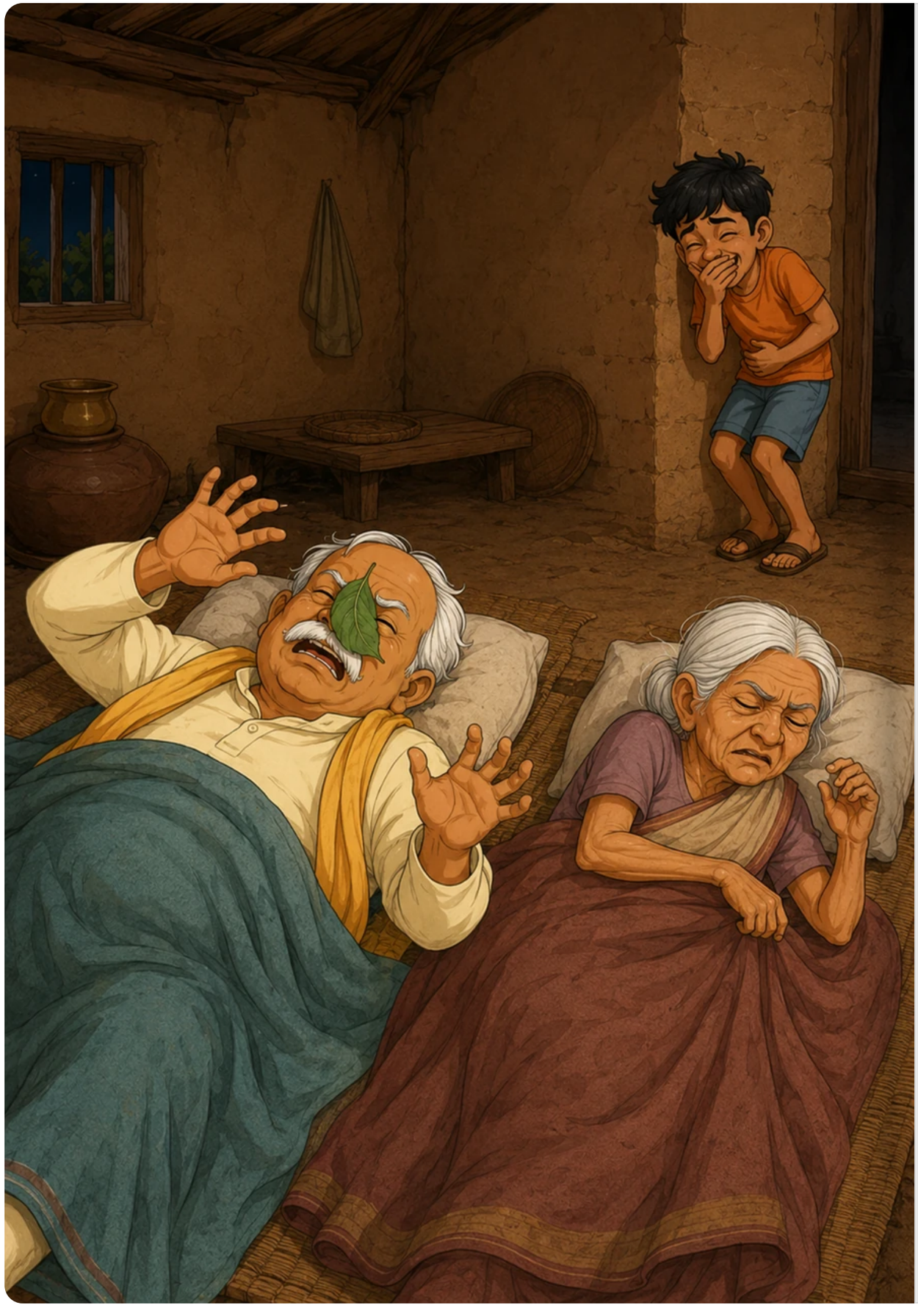

पत्ती उनकी नाक पर गुदगुदी करने लगी और वह नींद में ही हाथ हिलाते हुए खुद को और अपने साथी को परेशान करने लगे। चिंटू पास दीवार के पीछे खड़ा होकर हँसी के मारे लोटपोट हो रहा था।

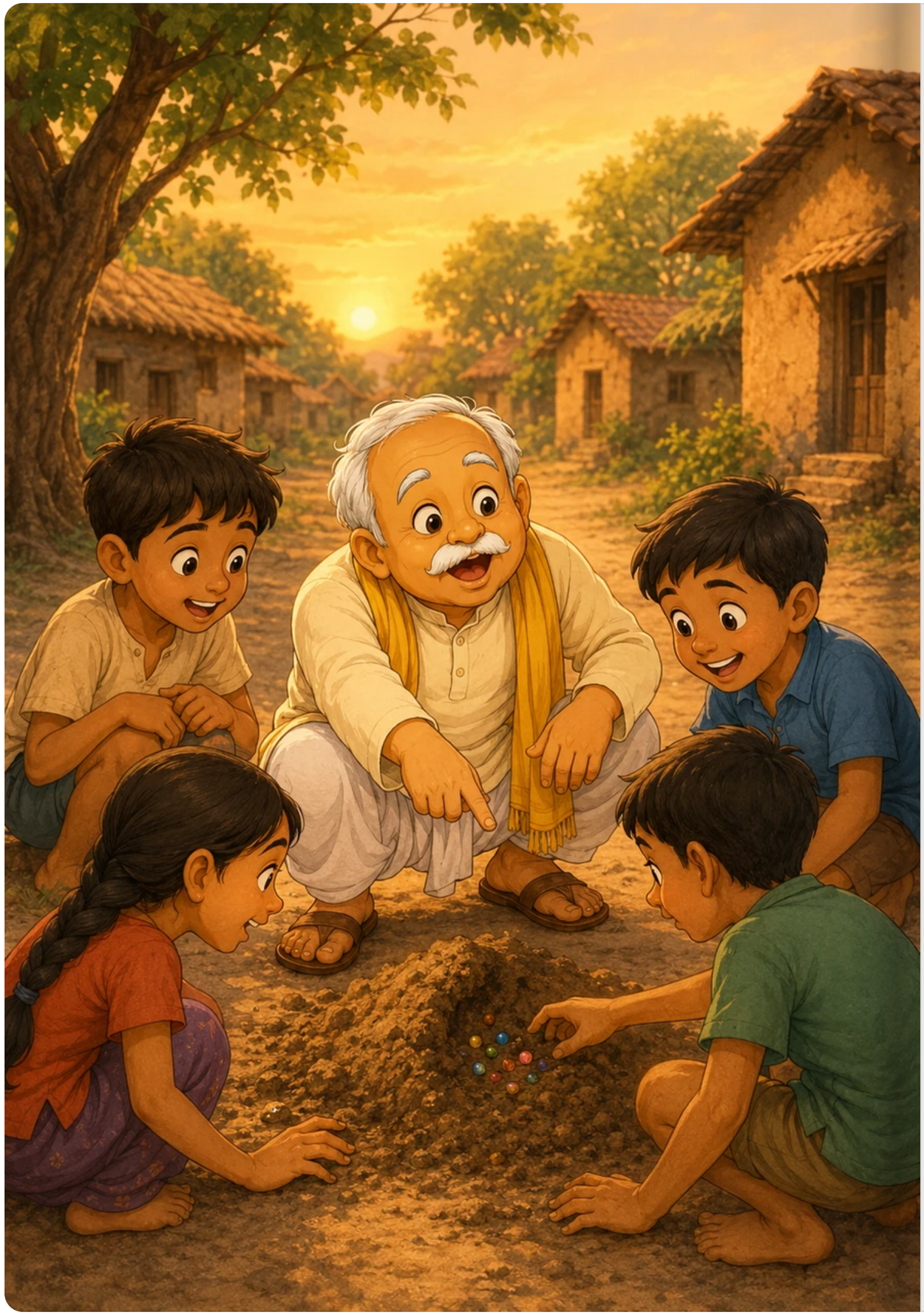

शाम को गाँव के बच्चे खेल रहे थे। चिंटू ने मिट्टी के एक ढेर मे
छोटी-छोटी रंगीन मोतियों को छिपा दिया और सबको बताया कि यहँ
खज़ाना है।

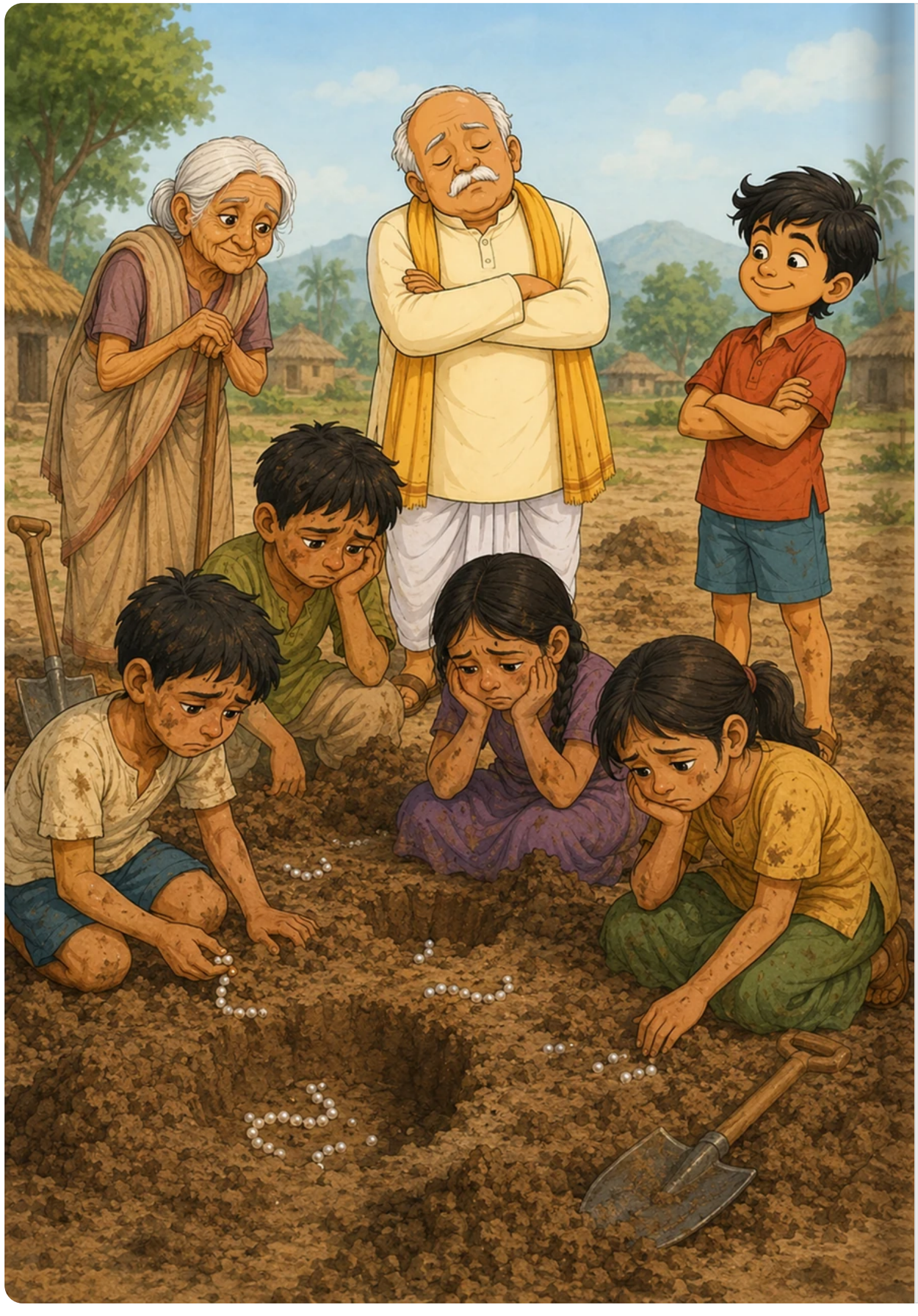

सारे बच्चे जोरों से मिट्टी खोदने लगे, लेकिन खज़ाने की जगह उन्हें सिर्फ मोतियाँ मिलीं। उनकी मेहनत बर्बाद हो गई और चिंटू अपनी चालाकी पर मुस्कुरा रहा था।

चिंटू ने फिर एक नयी शरारत सोची और हलवाई की दुकान की मिठाई के डब्बों के ऊपर एक नकली मकड़ी रख दी। उसे उम्मीद थी कि इसे देख कर हलवाई और ग्राहक डर जाएंगे।

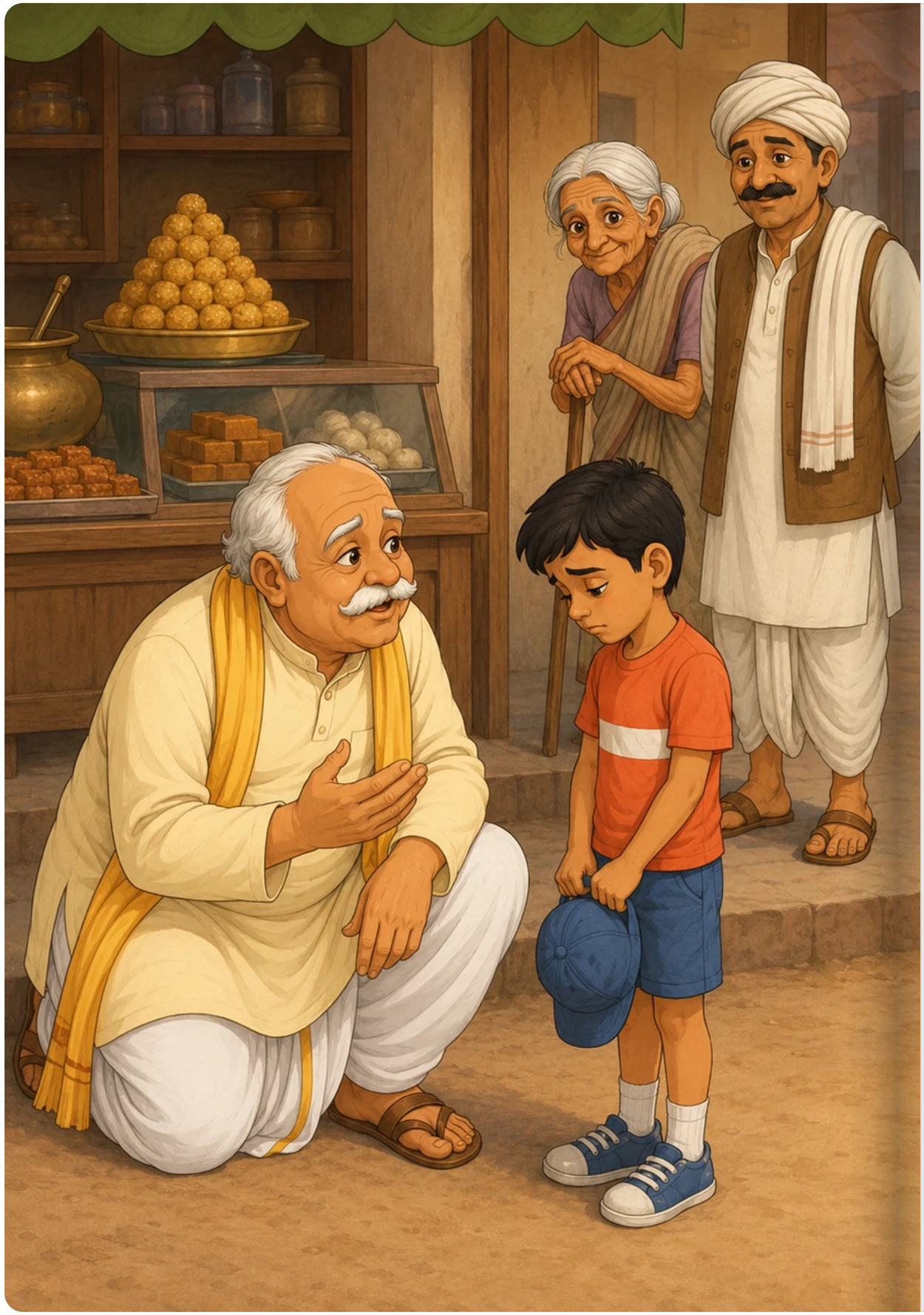

लेकिन हलवाई ने मकड़ी को देख कर समझ लिया कि यह चिंटू की ही हरकत है। उसने मकड़ी को हटा कर चिंटू को अपने पास बुलाया और उसे प्यार से समझाया कि उसकी शरारतों से किसी को चोट या परेशानी हो सकती है।

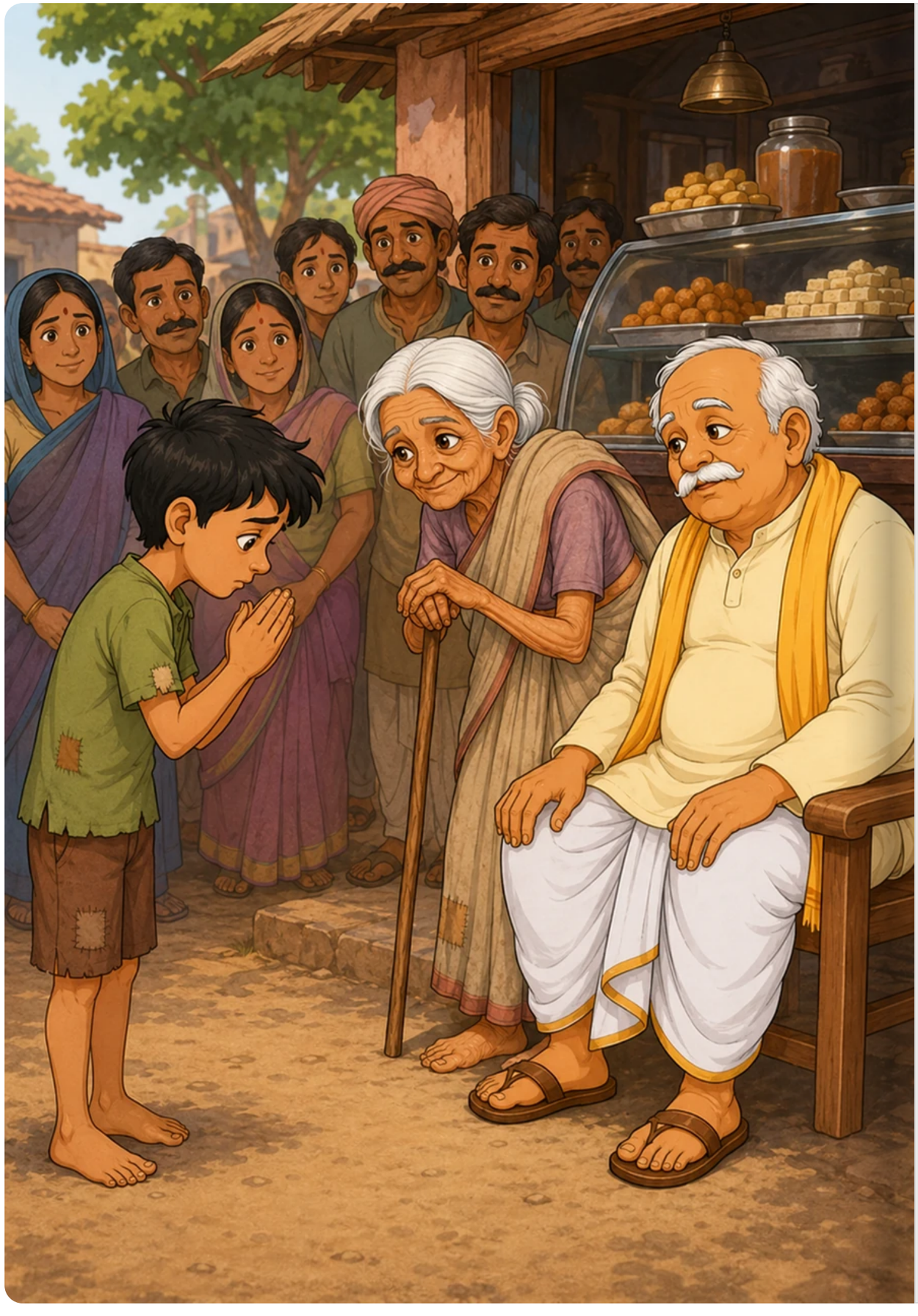

चिंटू को हलवाई की बात समझ आई और वह उदास हो गया।

उसने अपनी सभी शरारतों के लिए सब से माफ़ी माँगी और एक नेक लड़का बनने का वादा किया।